डॉ. अभिनव दिव्यान्शु

प्राचीन भारतीय इतिहास में उत्तरापथ

शोध संक्षेप-

प्रस्तुत शोध प्रत्र में उत्तरापथ क्या है व उसकी स्थिति क्या और कहॉ थी? इस पर प्रकाश डाला गया है। उत्तरापथ के संदर्भ में भारतीय इतिहास में कई भ्रान्तियॉ है जिनको दूर करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य विषय-

प्राचीन भारत में विभिन्न मार्गों से व्यापार हो रहा था। भारत एक विशाल देश है और इसमें अनेक राज्य थे। जो अनेक छोटे व बड़े मार्गों से आपस में जुड़ हुए थे। इन मार्गों में सर्वप्रमुख था- उत्तरापथ।[1] उत्तरापथ प्राचीन भारतीयों द्वारा प्रचलित किया गया शब्द है। सर्वप्रथम पाणनि ने अपनी पुस्तक *अष्टाध्यायी* में उत्तरापथ का उल्लेख किया है।[2]

हालांकि आधुनिक समय में विभिन्न विद्वानों ने उत्तरापथ का उल्लेख अपनी पुस्तकों में अपने अनुसार करते हैं और उसका अध्ययन भी अपने अनुसार प्रस्तुत करते हैं। परन्तु इससे पाठकों के समक्ष एक भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है कि सही मायनों में उत्तरापथ की स्थिति क्या थी? उत्तरापथ का अर्थ है- उत्तर की ओर जाने वाला पथ या मार्ग। पथ का अर्थ- मार्ग या सड़क होता है। यद्यपि इसकी व्याख्या प्राचीन व आधुनिक भारतीय इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न संदर्भों में की है जैसे-

1) सम्पूर्ण उत्तर भारत के संदर्भ में करते हैं।
2) उत्तर की ओर जाने वाले मार्ग से करते हैं।

---

[1]श्वाज़बर्ग, जोसेफ ई0, ए हिस्टॉरिकल एटलस ऑफ साउथ ऐशिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयोर्क, ऑक्सफोर्ड, 1992, पृष्ठ संख्या-19.

[2]मिश्र, डॉ0 जयशंकर, 'प्राचीन भारत का समाजिक इतिहास',बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, पृष्ठ संख्या-624.

3) पश्चिम भारतीय भू भाग से करते हैं।

4) उत्तर भारत के प्रमुख मार्ग के रूप में परिभाषित करते हैं।[3]

मेगस्थनीज़ ने इसे ही अपनी पुस्तक *इण्डिका* में 'नॉर्दन रूट' कहा है।[4] इसी नॉर्दन रूट का हिन्दी रूपान्तरण उत्तरापथ है। कौटिल्य भी इसकी चर्चा करता है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में इसे *हैमवतपथ* कहकर सम्बोधित किया है। जो उत्तरापथ के तक्षशिला व वाह्लीक का इलाका था। इसके अलावा जोसेफ ई. श्वाज़बर्ग ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ए *हिस्टॉरिकल एटलस ऑफ साउथ ऐशिया* में उत्तरापथ व हैमवतपथ दोनों को चित्र द्वारा स्पष्ट किया है।[5] इस तरह वे भ्रम कि स्थिति का निराकरण करतें है।

इस संदर्भ में पैट्रिक के. ओ. ब्राइन ने एक मानचित्रावली विषय पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *फिलिप्स ऐटलस ऑफ वर्ड हिस्ट्री, इन्सटीटयूट ऑफ हिस्टॉरिकल रिसर्च, युनिवर्सिटी ऑफ लन्दन* में इस पर चर्चा की है।[6] वे इस पुस्तक में एक मानचित्र के द्वारा भारत में उत्तरापथ की स्थिति को दर्शाते हैं। जिससे बात काफी स्पष्ट हो जाती है।

अगर सम्पूर्ण भारतीय इतिहास को देखें तो उत्तरापथ की स्थिति साफ हो जाती है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अफगान शासक शेरशाह सूरी (1540 ईसवी से 1545 ईसवी तक) ने 4 सड़कों का निर्माण करवाया था। जिसमें सर्वप्रमुख सड़क थी- '*सड़क-ए-आज़म*'। प्राचीन भारतीय इतिहास में यही सड़क, मार्ग व पथ ही उत्तरापथ है।[7] यही सड़क-ए- आज़म आगे चल कर ब्रिटिश काल में अंग्रेजों ने इसी को ही ग्राण्ड ट्रंक रोड कह कर सम्बोधित किया।

---

[3]सिंह, उपेन्दर,ए हिस्टी ऑफ ऐशियेन्ट एण्ड अर्ली मेडिवल इंडिया, फ्रॉम द स्टोन ऐज टू द 12 सैन्चुरी, पियरसन लॉगमैन, पृष्ठ संख्या-290.

[4]राय, डॉ0 नन्दजी,प्राचीन भारत में यातायात के साधन,परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1992,पृष्ठ संख्या-191.

[5]श्वाज़बर्ग, जोसेफ ई0, ए हिस्टॉरिकल एटलस ऑफ साउथ ऐशिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, ऑक्सफोर्ड, 1992, पृष्ठ संख्या-18, प्लेट- III बी.4.

[6]ओ0 ब्राइन, पैट्रिक के0, फिलिप्स ऐटलस ऑफ वर्ड हिस्ट्री, इन्सटीटयूट ऑफ हिस्टॉरिकल रिसर्च, युनिवर्सिटी ऑफ लन्दन, संस्करण-2, पुनः मुद्रण-2007, पृष्ठ संख्या-47.

[7]थपलियाल,डॉ0 हरी प्रसाद,'भारत की ऐतिहासिक मानचित्रावली' हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा. लि. ,वाराणसी, पृष्ठ संख्या-44.

"ग्राण्ड ट्रंक रोड- कलकत्ता के सुनार गाँव से पेशावर तक 500 कोस लम्बी थी।"[8] वर्तमान में यह सड़क भारत में 'राष्ट्रीय राज मार्ग सँख्या-2' के नाम से जानी जाती है। यद्यपि ये और बात है कि वर्तमान समय में राष्ट्रीय राज मार्ग सँख्या-2 का क्षेत्र सीमित हो गया है क्योंकि पाकिस्तान व हिन्दुस्तान के बटवारे से इस सड़क का कुछ हिस्सा पाकिस्तान में व दूसरा बड़ा हिस्सा हिन्दुस्तान में है। वर्तमान में यह सड़क भारत में '*राष्ट्रीय राज मार्ग सँख्या-2*' के नाम से जानी जाती है।

अर्थात पाणनि की अष्टाध्यायी में वर्णित मार्ग- *उत्तरापथ*, उसके पश्यचात मेगस्थनीज़ द्वारा वर्णित मार्ग-*नॉर्दन रूट*, भारतीय मध्यकालोन इतिहास में शेरशाह सूरी द्वारा बनायी गयी सड़क-*सड़क ए आज़म*, अग्रेजों द्वारा पुनः बनवायी गयी *ग्राण्ड ट्रंक रोड* तथा वर्तमान में भारत सरकार द्वारा घोषित '*राष्ट्रीय राज मार्ग सँख्या-2 या नेश्नल हाईवे नम्बर-2*' ही प्राचीन समय का उत्तरापथ मार्ग है। एक ही सड़क को विभिन्न कालों में कई नामों से पुकारा गया है। परन्तु वे सभी नाम एक ही स्थिति या मार्ग को सम्बोधित करते हैं। जिसका दक्षिणी बिन्दु ताम्रलिप्त तथा उत्तरी बिन्दु काबुल था। ताम्रलिप्त ही कलकत्ता का प्राचीन नाम है।

उत्तरापथ मार्ग- काबुल से, गान्धार की राजधानी पुष्कलावती से होता हुआ, तक्षशिला, पंजाब होते हुए, यमुना पार कर, हस्तिनापुर, मथुरा, कान्यकुब्ज, प्रयाग, काशी, गया व पटलिपुत्र को संयुक्त करता हुआ ताम्रलिप्त तक जाता था। इस आधार पर कहा जा सकता है कि यह एक मार्ग था जो ताम्रलिप्त (बंगाल) से, भारत क आन्तरिक भागों से गुजरता था। जो आगे चल कर, उत्तर की ओर जाकर विश्व के अन्य मागों व अन्य नगरों से मिलता था। मेगथनीज़ इसे अपनी इण्डिका पुस्तक में *नॉर्दन रूट* के नाम से सम्बोधित करता हैं।[9]

इस आधार पर कहा जा सकता है कि यह एक मार्ग था जो भारत के आन्तरिक भागों से गुजरता था। जो आगे चल कर उत्तर की ओर जाकर विश्व के अन्य मार्गों व अन्य नगरों से मिलता था। ऐसा ही मत रामशरण शर्मा ने भी व्यक्त किया है। वे कहते है कि उत्तरापथ तक्षशिला से अधुनिक पंजाब होते हुए यमुना नदी से होते हुए मथुरा नगर व फिर उज्जैन जाता

[8]वही, पृष्ठ संख्या-44.

[9]मैक्रिनडली,जे0 डब्लू0', एन्शियेंट इंडिया एस डिस्क्राइब्ड बाई मैगस्थनीज़ एण्ड ऐरियन', लन्दन, 1877.

था। जहाँ से वह पश्चिमी समुद्री तट भड़ौच बन्दरगाह तक जाता था। उज्जैन से एक मार्ग और निकलता था जो इलाहाबाद से होता हुआ कौशांबी तक जाता था। [10]

उपेन्दर सिंह ने अपनी पुस्तक *ए हिस्ट्री ऑफ ऐशियेन्ट एण्ड अर्ली मेडिवल इंडिया, फ्रॉम द स्टोन ऐज टू द 12 सैन्चुरी* में भी उत्तरापथ को एक विशाल मार्ग के रूप में सूचित किया है। वे एक चित्र को भी दर्शाते हैं। जिससे उत्तरापथ स्थिति और भी साफ हो जाती है।[11] इससे यह बात साबित होती है कि उत्तरापथ एक मार्ग था। प्राचीन भारत के व्यापारिक मार्गों के सन्दर्भ में विभिन्न पुस्तकों के अध्ययन के दौरान यह ज्ञात होता है कि कई विद्वान विभिन्न मार्गों को बड़े मार्गों में जोड़ कर, उसे एक ही मार्ग के रूप में उल्लेखित कर देते है। इससे बहुत भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है।

वास्तव में इस भ्रम की स्थिति को दूर करने के लिये यह कहा जा सकता है कि एक बड़ा मार्ग होता है जिससे कई छोटें मार्ग निकलते हैं। दोनो का उल्लेख करना जरूरी होता है। प्राचीन भारतीय मार्गों के सन्दर्भ में सबसे विशद व्याख्या डॉ0 मोतिचन्द्र ने की है।[12] इसी संदर्भ में एक नयी व्याख्या भारत के भूगोल को आधार मानकर डॉ0 ओम प्रकाश ने की है। जो सबसे ज्यादा सरल व उचित मालूम पड़ती है। डॉ0 ओम प्रकाश[13] ने भारतीय प्राचीन पथों को उनके नाम के साथ-साथ भौगोलिक आधार पर भी विभाजन कर उनकी सटीक व्यख्या प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।

यहाँ एक बात गौर करने लायक है कि भौगोलिक विभाजन से, एक तो मार्गों का स्थिति अपने आप ही निर्धारित व स्पष्ट हो जाती है तथा दूसरी बात यह कि छोटे व बड़े पथों को आपस में जोड़कर व संयुक्त तौर पर उसकी व्याख्या करने पर जो भ्रम की स्थिति बनती है, उसकी भी संभावना न्यून हो जाती है।

---

[10]शर्मा,रामशरर्ण, 'प्रारंभिक भारत का परिचय',ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड,नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ संख्या-228.

[11]सिंह, उपेन्दर,ए हिस्टी ऑफ ऐशियेन्ट एण्ड अर्ली मेडिवल इंडिया, फ्रॉम द स्टोन ऐज टू द 12 सैन्चुरी, पियरसन लॉगमैन, पृष्ठ संख्या-290.

[12]डॉ0 मोतिचन्द्र,'सार्थवाह-प्रचीन भारत की पथ पद्धति',बिहार राष्टभाषा परिषद्,पटना,1953.

[13]प्रकाश, डॉ0 ओम प्रकाश, 'प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास',विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली,2001.

हिन्दुकुश पर्वत को व हिमालय को प्राचीन समय से ही भारत की उत्तर सीमा माना गया है। चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में मेगस्थनीज़ एक यूनानी राजदूत था । जिसने एक पुस्तक *इण्डिका* लिखि थी।[14] मेगस्थनीज़[15] भी इसी उत्तरापथ के रास्ते से होता हुआ भारत आया था। उसने इस मार्ग को *नॉर्दन रूट* कहकर सम्बोधित किया है। डॉ0 दास के मत में यह मार्ग (उत्तरापथ) केवल सिन्धु नदी तक ही समाप्त नहीं होता था बल्कि ये तो ईरान तक चला जाता था। दास का मत उचित नहीं है क्योंकि उन्होंने कई देशों के पथों को इस उत्तरापथ में एक साथ समाहित कर दिया है। मेगस्थनीज के अनुसार यह महापथ अनेक भागों में बनाया गया था। जिसका विवरण निम्न है [16]–

1. प्यूकेलाओटिस (पुष्पकलावती- गान्धार की राजधानी तथा अधुनिक चरासद्दा) से तक्षशिला तक।
2. तक्षशिला से सिन्धु नदी का पार कर झेलम नदी (हाइडेस्पीज) तक।
3. हाइफेसिस (व्यास) से वहाँ तक जहाँ सिकन्दर ने अपनी वेदियाँ बनवाई थीं।
4. व्यास से हेंसिड्रस (सतलुझ) तक।
5. सतलुझ से यमुना (इयोमेनीज) तक।
6. यमुना से हस्तिनापुर व हस्तिनापुर से गंगा नदी तक।
7. गंगा नदी से रोडोफा (आधुनिक अनूपशहर क पास उभाई स्थान) तक।
8. रोडोफा से कैलिनपैक्सा (कन्नौज) तक।
9. कन्नौज से इलाहाबाद (प्रयाग) मे गंगा–यमुना के संगम तक।
10. प्रयाग से पाटलिपुत्र नगर तक।
11. पाटलिपुत्र से गंगा के मुहाने पर स्थित ताम्रलिप्त बन्दरगाह तक।

सामान्य तौर पर मार्गों को दो भागों में बाँटा जा सकता है- स्थल मार्ग व जल मार्ग। प्राचीन भारतीय साहित्य से कुछ प्रमुख व अन्य छोटे व बड़े मार्गों का पता चलता है। जिनका उल्लेख पाणिनि ने अपनी पुस्तक *अष्टाध्यायी* में किया है। इनमें प्रमुख है- वारि–पथ,

[14]मुखर्जी,राधाकुमुद,'चंद्रगुप्त मौर्य और उसका काल' राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,1990,पृष्ठ संख्या–54.

[15]मैक्रिनडली,जे0 डब्लू0,' एन्शियेंट इंडिया एस डिस्क्राइब्ड बाई मैगस्थनीज़ एण्ड ऐरियन', लन्दन, 1877.

[16]गुप्ता, डॉ0 देवेन्द्र कुमार, 'प्राचीन भारत में व्यापार',कॉलेज बुक डिपो, नयी दिल्ली,पृष्ठ संख्या–135.

स्थल-पथ, करि-पथ, अज-पथ, शड्.कु-पथ, राज-पथ, सिंह-पथ, हंस-पथ व देव-पथ आदि।[17]

शोध परिणाम-

प्रस्तुत शोध पत्र से उत्तरापथ के पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है। इससे सभ्यता, नगरीकरण व संस्कृति के सही अर्थों को समझने में मदद मिलती है। उत्तरापथ सम्पूर्ण उत्तर भारत का एक महापथ था। जो गंगा नदी के किनारे से होता हुआ जाता था। भारत विविधताओं वाल देश हमेशा से रहा है इसलिए यही पथ उसकी एकता को भी दर्शाता है।

चित्र संख्या-1

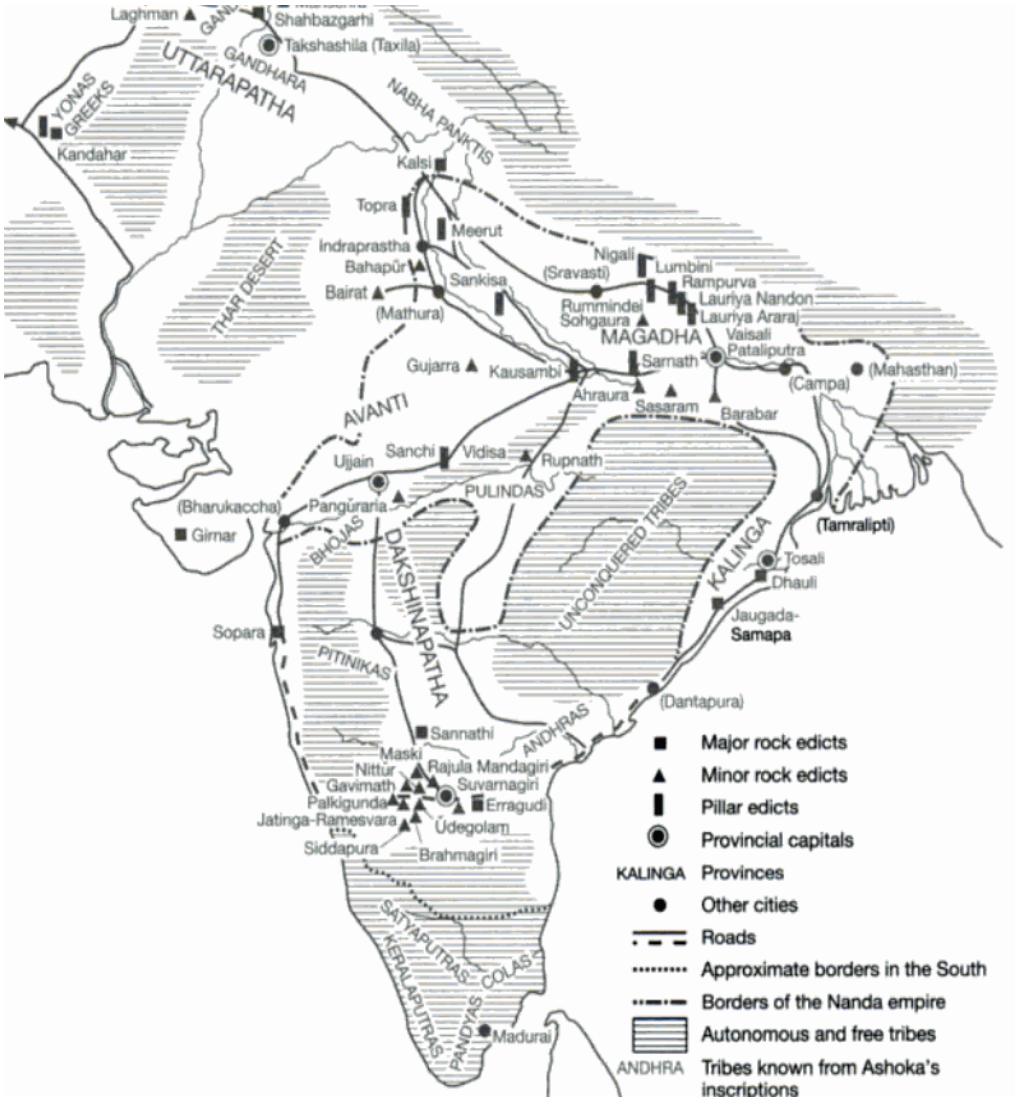

[17]मिश्र, डॉ0 जयशंकर, 'प्राचीन भारत का समाजिक इतिहास',बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, पृष्ठ संख्या-623.

विवरण–उत्तरापथ व अन्य मार्गों का एक चित्र। [18]

संदर्भ ग्रन्थ

1. श्वाज़बर्ग, जोसेफ ई0, ए हिस्टॉरिकल एटलस ऑफ साउथ ऐशिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयोर्क, ऑक्सफोर्ड, 1992.
2. मिश्र, डॉ0 जयशंकर, 'प्राचीन भारत का समाजिक इतिहास',बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना.
3. सिंह, उपेन्दर,ए हिस्टी ऑफ ऐशियेन्ट एण्ड अर्ली मेडिवल इंडिया, फ्रॉम द स्टोन ऐज टू द 12 सैन्चुरी, पियरसन लॉगमैन.
4. राय, डॉ0 नन्दजी,प्राचीन भारत में यातायात के साधन,परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1992.
5. ओ0 ब्राइन, पैट्रिक के0, फिलिप्स ऐटलस ऑफ वर्ड हिस्ट्री, इन्सटीटयूट ऑफ हिस्टॉरिकल रिसर्च, युनिवर्सिटी ऑफ लन्दन, संस्करण–2, पुनः मुद्रण–2007.
6. थप्लियाल,डॉ0 हरी प्रसाद,'भारत की ऐतिहासिक मानचित्रावली' हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा. लि. ,वाराणसी.
7. मैक्निनडली,जे0 डब्लू0,' एन्शियेंट इंडिया एस डिस्क्राइब्ड बाई मैगस्थनीज़ एण्ड ऐरियन', लन्दन, 1877.
8. शर्मा,रामशरर्ण, 'प्रारंभिक भारत का परिचय',ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड,नई दिल्ली, 2009
9. डॉ0 मोतिचन्द्र,'सार्थवाह–प्रचीन भारत की पथ पद्धति',बिहार राष्टभाषा परिषद्,पटना,1953.
10. प्रकाश, डॉ0 ओम प्रकाश, 'प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास',विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली,2001.
11. मुखर्जी,राधाकुमुद,'चंद्रगुप्त मौर्य और उसका काल' राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,1990.
12. गुप्ता, डॉ0 देवेन्द्र कुमार, 'प्राचीन भारत में व्यापार',कॉलेज बुक डिपो, नयी दिल्ली.

[18]Historum.(2006) . *PreAshokan Kalinga. - Historum - history forums*. Retrieved September 3, 2016, from http://historum.com/asian-history/65339-pre-ashokan-kalinga.htmlIn-line Citation:(Historum, 2006)